International Journal of Literacy and Education

E-ISSN: 2789-1615
P-ISSN: 2789-1607
Impact Factor: 5.69
IJLE 2023; 3(2): 90-93
www.educationjournal.info
Received: 03-07-2023
Accepted: 08-08-2023

राजभान जायसवाल
शोध छात्र शिक्षा, लाइफ लांग लर्निंग विभाग, अवधेश प्रताप सिंह वि.वि., रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

डॉ. संतोष कुमार द्विवेदी
प्राचार्य, ज्योत्सना शिक्षा महाविद्यालय, सीधी, मध्य प्रदेश, भारत

Corresponding Author:
राजभान जायसवाल
शोध छात्र शिक्षा, लाइफ लांग लर्निंग विभाग, अवधेश प्रताप सिंह वि.वि., रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् अनुसूचित जाति एवं जनजाति वर्ग के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं सामाजिक–आर्थिक स्तर के मध्य सहसम्बन्ध का अध्ययन (सीधी जिले के विशेष संदर्भ में)

राजभान जायसवाल, डॉ. संतोष कुमार द्विवेदी

सारांश
प्रस्तुत शोध पत्र में सीधी जिले के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् अनुसूचित जाति एवं जनजाति वर्ग के विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि एवं सामाजिक–आर्थिक स्तर के मध्य सहसम्बन्ध का अध्ययन किया गया है। प्रस्तुत शोध अध्ययन में सीधी जिले के सभी विकासखण्डों से 16–16 विद्यालय अर्थात कुल 80 विद्यालयों का चयन दैव निर्दशन पद्धति द्वारा किया गया है। न्यादर्श के रूप में चयनित प्रत्येक विकासखण्ड से 148 अनुसूचित जाति एवं 148 अनुसूचित जनजाति वर्ग (256 छात्र एवं छात्राएं) अर्थात कुल 1280 विद्यार्थियों का चयन दैव निदर्शन पद्धति से किया गया है। परिणामों के आधार पर कहा जा सकता है कि अनुसूचित जनजाति वर्ग के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं सामाजिक–आर्थिक स्तर में सार्थक संबंध 'r' = 0.919, अनुसूचित जाति वर्ग के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं सामाजिक–आर्थिक स्तर में सार्थक संबंध 'r' = 0.963 एवं df 638 है। अतः शोध क्षेत्र में अनुसूचित जाति एवं जनजाति वर्ग के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं सामाजिक–आर्थिक स्तर में सार्थक संबंध पाया गया है।

कूटशब्दः माध्यमिक स्तर, अनुसूचित जाति एवं जनजाति वर्ग के विद्यार्थी, शैक्षिक उपलब्धि, सामाजिक–आर्थिक स्तर

1. प्रस्तावना
शिक्षा एक व्यवस्थित प्रक्रिया है जिसके माध्यम से एक बच्चा या वयस्क ज्ञान, अनुभव, कौशल और अच्छा दृष्टिकोण प्राप्त करता है। यह व्यक्ति को सभ्य, परिष्कृत, सुसंस्कृत एवं शिक्षित बनाता है। सभ्य एवं सामाजिक समाज के लिए शिक्षा ही एकमात्र साधन है। इसका लक्ष्य व्यक्ति को पूर्ण बनाना है। प्रत्येक समाज शिक्षा को महत्व देता है क्योंकि यह सभी बुराइयों के लिए रामबाण है। यह जीवन की विभिन्न समस्याओं के समाधान की कुंजी है।

शिक्षा अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के छात्रों को सामाजिक मुख्यधारा में एकीकृत करने और आत्मसात करने का एक माध्यम है, पर भी तेजी से सवाल उठाया जा रहा है और इसे पूर्वाग्रह, भेदभाव और हाशिए पर काबू पाने में सीमित उपयोगिता के रूप में देखा जाता है। अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति जैसी बहिष्कृत आबादी के लिए शिक्षा में समानता लाने के लिए, विद्वान और कार्यकर्ता सामाजिक न्याय के एक ढांचे की वकालत करते हैं जो पहुंच, भागीदारी और परिणामों के संदर्भ में समानता की समग्र चिंताओं से परे है, जो गुणात्मक पहलुओं पर जोर देता है। शैक्षिक अनुभव और पहचान, आत्म–मूल्य और भावी जीवन की संभावनाओं पर उनका प्रभाव (सेकडा, 1989)[1]। उनका तर्क है कि ऐसा केवल उन्हीं स्कूलों में हो सकता है जो विशेष रूप से अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के छात्रों के लिए स्थापित किए गए हैं और जो इन छात्रों की सफलता में निवेशित हैं (इलिया, 2000)[2]। जबकि शिक्षक इस बात पर विभाजित रहते हैं कि गुणवत्तापूर्ण शिक्षा कैसे प्रदान की जाए जो एससी और एसटी समुदायों के जीवन में पर्याप्त सुधार लाएगी, चाहे वह मुख्यधारा के स्कूलों के माध्यम से हो या अलग–अलग स्कूलों के माध्यम से, इस बात पर आम सहमति है कि शिक्षा दोनों समूहों के हाशिए पर जाने को संबोधित करने के लिए एक महत्वपूर्ण संसाधन है।

जबकि अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति की आबादी के बीच अंतर इन दो समूहों में सामान्यीकरण को कठिन बनाता है, एससी और एसटी आबादी को समग्र समरूप समुदायों के रूप में मानना भी उतना ही समस्याग्रस्त है। भारत में अनुसूचित जातियों में 400 से अधिक प्रमुख जातियाँ और अनुसूचित जनजातियों में 500 से अधिक विभिन्न जनजातियाँ हैं। इसलिए इनमें से प्रत्येक आबादी के भीतर बहुत अधिक विविधता है जिसके लिए विशेष स्थानों में एससी और एसटी समुदायों के विशिष्ट इतिहास की अधिक सूक्ष्म समझ की आवश्यकता है।[3] अनुसूचित जनजाति समुदाय का व्यापक भौगोलिक वितरण अपने साथ संस्कृति, इतिहास और आर्थिक स्थितियों में व्यापक विविधता

लाता है। समूहों के हाशिये पर जाने की सीमा भी भिन्न–भिन्न होती है, साथ ही उनकी आकांक्षाएँ, आजीविका की आवश्यकताएँ और शैक्षिक आवश्यकताएँ भी भिन्न होती हैं। हालाँकि, राज्य के कार्यक्रम आम तौर पर सभी अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति समुदायों पर लक्षित होते हैं, और इसलिए उन आबादी के बीच सामाजिक और/या आर्थिक रूप से बेहतर लोगों को लाभान्वित करने की प्रवृत्ति होती है। नई शिक्षा नीतियों को सफल बनाने के लिए, विशिष्ट अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति समुदायों द्वारा सामना किए जाने वाले भेदभाव और हाशिए पर जाने की प्रकृति पर शोध की आवश्यकता है।

2. अध्ययन की आवश्यकता

प्रस्तुत शोध विषय अनुसूचित जाति एवं जनजाति वर्ग के विद्यार्थियों में शैक्षिक उपलब्धि का विभिन्न मनोवैज्ञानिक कारकों यथा व्यक्तित्व, सामाजिक–आर्थिक स्तर, लिंग एवं विद्यालय में स्थिति से संबंधों की सार्थकता की पहचान करना है। अध्ययन से अनुसूचित जाति एवं जनजाति वर्ग के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं सामाजिक–आर्थिक स्तर का आंकलन किया गया है।

3. उद्देश्य

अतः प्रत्येक क्रिया का कुछ उद्देश्य अवश्य होता है बिना उद्देश्य के विभिन्न प्रकार कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है। इन्हीं उद्देश्यों को ध्यान में रखकर शोध कार्य किया जाता है। प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में निम्नलिखित उद्देश्य है –

1. अनुसूचित जनजाति वर्ग के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं सामाजिक–आर्थिक स्तर का अध्ययन करना।
2. अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं सामाजिक–आर्थिक स्तर का अध्ययन करना।

4. शोध की परिकल्पनाएँ

1. अनुसूचित जनजाति वर्ग के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं सामाजिक–आर्थिक स्तर में सार्थक संबंध है।
2. अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं सामाजिक–आर्थिक स्तर में सार्थक संबंध है।

5. शोध समस्या का सीमांकन

प्रस्तुत शोध कार्य का क्षेत्र सीधी जिला है। इसके अन्तर्गत 5 विकासखण्ड – सीधी, सिहावल, कुसमी, मझौली एवं रायपुर नैकिन हैं। जिला अन्तर्गत स्थित माध्यमिक विद्यालय जो मध्यप्रदेश शासन से मान्यता प्राप्त है, इस अध्ययन के अन्तर्गत सम्मिलित होगें।

समष्टि व प्रतिदर्शः प्रस्तुत शोध अध्ययन में सीधी जिले के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत अनुसूचित जाति एवं जनजाति वर्ग के सभी विद्यार्थियों का अध्ययन किया जाना व्यवहारिक दृष्टिकोण से संभव नहीं है। सीमित समय और सीमित व्यय में अधिक प्रयुक्त, त्रुटिहीन और विश्वसनीय परिणाम प्राप्त करने के लिए न्यादर्श का उपयोग किया गया है। प्रस्तुत शोध अध्ययन में सीधी जिले के सभी विकासखण्डों से 16–16 विद्यालय अर्थात कुल 80 विद्यालयों का चयन दैव निर्दशन पद्धति द्वारा अध्ययन किया गया है। विद्यालयों का चयन करते समय यह विशेष रूप से ध्यान रखा गया कि सभी विकासखण्डों के माध्यमिक विद्यालय ऐसे हो जो अपने–अपने क्षेत्र का प्रतिनिधित्व कर सकें तथा यह सभी संस्थान शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों से संबंधित हों।

अनुसूचित जाति एवं जनजाति वर्ग के विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि एवं एवं सामाजिक–आर्थिक स्तर का अध्ययन करने के लिए न्यादर्श के रूप में चयनित प्रत्येक विद्यालय से 08–08 अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति अर्थात कुल 1280 अनुसूचित जाति एवं जनजाति के विद्यार्थियों का चयन दैव निदर्शन पद्धति से किया गया है।

6. अध्ययन विधि

- **सर्वेक्षण अध्ययन विधिः** सर्वेक्षण अनुसंधान का एक महत्वपूर्ण अंग है। इसके द्वारा शोध समस्या के विभिन्न पक्षों से सम्बन्धित आंकड़ों का संग्रहण किया जाता है। आंकड़े मुख्य तथा वर्तमान स्तर का निर्धारण, वर्तमान स्तर की मान्य स्तर से तुलना, तथा वर्तमान स्तर को विकसित करने में महत्वपूर्ण उपादान होते हैं। सर्वेक्षण में व्यक्ति की अपेक्षा तथ्यों, परिस्थितियों तथा गणनाओं को प्राथमिकता दी जाती है।
- **साख्यिकीय विधिः** सर्वेक्षण विधि से प्राप्त ऑकड़ो का वर्गीकरण एवं सारणीयन किया गया है। जिनकी व्याख्या एवं विष्लेषण हेतु, सांख्यकीय विधियॉ प्रयोग में लाई गयी है। प्रस्तुत शोधकार्य में परिकल्पनाओं का परीक्षण सांख्यकीय विधियों द्वारा करने के लिये– correlation Test का प्रयोग किये गये है, साथ ही गुणात्मक विश्लेषण पर भी ध्यान रखा गया हैं।

7. शोध उपकरण

शोध समस्या में उपकरणों का चुनाव शोध की परिकल्पना की प्रकृति पर निर्भर करती है। प्रत्येक उपकरण एक विशेष प्रकार के आंकड़े एकत्रित करने के लिए उपयुक्त होता है। आवश्यकता एवं सुविधा की दृष्टि से शुद्ध, वस्तुनिष्ठ तथा विश्वसनीय आंकड़ों के संकलन के लिए स्वनिर्मित प्रश्नावली एवं अद्धवार्षिक परीक्षाफल के परिणामों के आधार पर शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन किया गया है।

8. पूर्व अध्ययन समीक्षा

पूर्ववर्ती अध्ययन से तात्पर्य अनुसंधान की समस्या से सबन्धित उन सभी प्रकार की पुस्तकों, ज्ञान कोशों, पत्र–पत्रिकाओं, शोध पत्रों तथा अभिलेखों आदि से है, जिनके अध्ययन से अनुसंधानकर्ता को अपनी समस्या के चयन, परिकल्पनाओं के निमार्ण, अध्ययन की रूपरेखा तैयार करने तथा कार्य को आगे बढ़ाने में सहायता मिलती है इनमें से मुख्य रूप से कपिल, एच. के. (1996)[4], पाठक, पी.डी. (1998)[5], राय, पी. एवं राय, सी.पी. (2010)[6], अग्रवाल, आर. एवं अरीना, विपिन (1989)[7], प्रसाद, गोमती (2004)[8], त्रिपाठी, डॉ. लोकेश (2014)[9], निगम, श्रीमती अमलेन्दु किरन (2016)[10], ने शोध विधि एवं शैक्षिक उपलब्धि से सम्बन्धित कार्य किये है।

9. शोध क्षेत्र का सामान्य परिचय

सीधी जिला म.प्र. की राजधानी भोपाल से उत्तर पूर्वी दिशा में सड़क मार्ग से 635 किलो मीटर दूर है तथा रीवा संभाग के मुख्यालय से दक्षिण पूर्व में 80 किलोमीटर पर जिला मुख्यालय स्थित है। जिला सीधी मूलतः पठारी व पर्वतीय प्रदेश है इसका विस्तार 23°47′ से 24°42′ उत्तरी अक्षांश तथा 81°18′ से 82°49′ पूर्वी देशान्तर के मध्य में स्थित है।[11]

जिला सीधी मध्यप्रदेश के उत्तर पूर्व क्षेत्र में स्थित है। यह प्राकृतिक संसाधनों से परिपूर्ण है। इसके पूर्व में उत्तर प्रदेश का मिर्जापुर तथा सोनभद्र जिला, दक्षिण में छत्तीसगढ़ राज्य का कोरिया जिला पश्चिम में शहडोल तथा सतना जिला एवं उत्तर में रीवा जिला स्थित है। जिले की समुद्र तल से निम्नतम ऊँचाई 243.84 मी. तथा उच्चतम ऊँचाई 609.60 मी. है। जिले का भौगोलिक क्षेत्रफल 10526 वर्ग कि.मी. है। यह जिला पूर्व से पश्चिम 155 कि.मी. तथा उत्तर से दक्षिण 95 कि.मी. फैला हुआ

है। क्षेत्रीयता की दृष्टि से यह जिला भारत के कुल भू–भाग का 0.37 प्रतिशत है।

10. परिणामों का विश्लेषण एवं व्याख्या

शोधार्थी द्वारा किया गया कोई भी शोध कार्य सही अर्थों में तभी प्रतिबिम्बित होता है, जब शोधार्थी द्वारा उस समस्या की वास्तविक स्थिति का मूल्यांकन किया जाय। इसके लिये यह आवश्यक है, कि शोधार्थी द्वारा शोध अध्ययन में उपयोग किये गये समस्त शोध उपकरणों द्वारा प्राप्त जानकारियों को व्यवस्थित क्रम में सारणीबद्ध किया जाय, निम्नानुसार है–

सारणी 1: अनुसूचित जनजाति वर्ग के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं सामाजिक–आर्थिक स्तर में सार्थक संबंध का सांख्यिकीय मान

चर (Variable)	संख्या (N)	सहसंबंध (r)	मुक्तांश (df)
शैक्षिक उपलब्धि एवं सामाजिक–आर्थिक स्तर	640	0.919	638

*0.05 स्तर पर 'r' का मान = 0.074

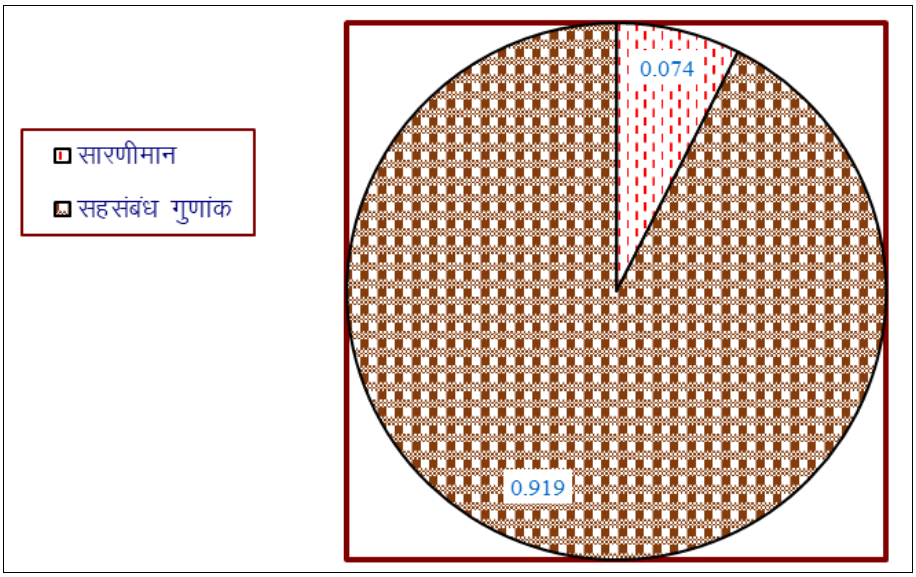

आरेख 1: अनुसूचित जनजाति वर्ग के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं सामाजिक–आर्थिक स्तर में सार्थक संबंध का आरेखीय निरूपण

सारणी 1: के अवलोकन से यह ज्ञात होता है, कि अनुसूचित जनजाति वर्ग के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं सामाजिक–आर्थिक स्तर में सार्थक संबंध 'r' = 0.919 एवं df 638 है। यह 'r' तालिका के 0.05 से अधिक है। इसलिए 'r' का मूल्य सार्थक होने की वजह से परिकल्पना स्वीकृत हो जाती है। अतः यह स्पष्ट होता है कि अनुसूचित जनजाति वर्ग के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं सामाजिक–आर्थिक स्तर में सार्थक संबंध है। अतः यह परिकल्पना सत्यापित होती है।

सारणी 2: अनुसूचित जाति वर्ग के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं सामाजिक–आर्थिक स्तर में सार्थक संबंध का सांख्यिकीय मान

चर (Variable)	संख्या (N)	सहसंबंध (r)	मुक्तांश (df)
शैक्षिक उपलब्धि एवं सामाजिक– आर्थिक स्तर	640	0.963	638

*0.05 स्तर पर 'r' का मान = 0.074

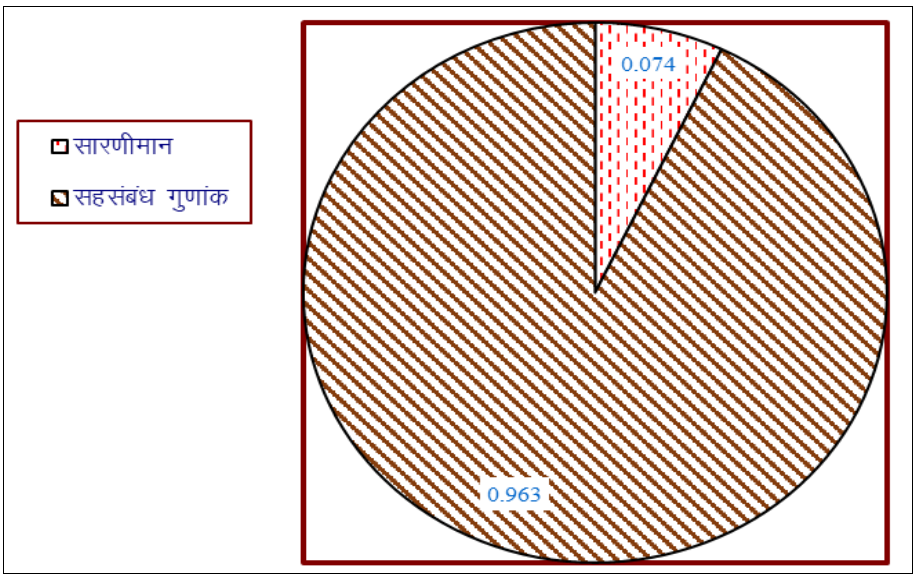

आरेख 2: अनुसूचित जाति वर्ग के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं सामाजिक–आर्थिक स्तर में सार्थक संबंध का आरेखीय निरूपण

सारणी क्रमांक 2 के अवलोकन से यह ज्ञात होता है, कि अनुसूचित जाति वर्ग के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं सामाजिक–आर्थिक स्तर में सार्थक संबंध 'r' = 0.963 एवं df 638 है। यह 'r' तालिका के 0.05 से अधिक है। इसलिए 'r' का मूल्य सार्थक होने की वजह से परिकल्पना स्वीकृत हो जाती है। अतः यह स्पष्ट होता है कि अनुसूचित जाति वर्ग के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं सामाजिक–आर्थिक स्तर में सार्थक संबंध है। अतः यह परिकल्पना सत्यापित होती है।

11. निष्कर्ष

शोध क्षेत्र में अनुसूचित जनजाति वर्ग के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं सामाजिक–आर्थिक स्तर में सार्थक संबंध है और इसी प्रकार अनुसूचित जाति वर्ग के विद्यार्थियों में भी शैक्षिक उपलब्धि एवं सामाजिक–आर्थिक स्तर में सार्थक संबंध पाया गया है।

12. सन्दर्भ ग्रंथ

1. Secada WG. Educational Equity versus Equality of Education: An Alternative Conception. In Secada, W.G. (ed.), Equity in Education. New York: Falmer Press; c1989.
2. Illiah K. The State Oppressions and Weaker Sections. In Rao, C.S. and Francis, D. (eds.), Development of Weaker Sections. Jaipur and New Delhi: Rawat Publications; c2000.
3. Sedwal Mona, Kamat Sangeeta. Education and Social Equity with a Special Focus on Scheduled Castes and Scheduled Tribes in Elementary Education, National University of Educational Planning and Administration NUEPA; c2008. p. 1-43.
4. कपिल, एच.के. (1996) : सांख्यिकी के मूल तत्व, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा.
5. पाठक, पी.डी. (1998) : भारतीय शिक्षा का विकास एवं समस्याएँ, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा.
6. राय, पी. एवं राय, सी.पी. (2010) : अनुसंधान परिचय. आगरा : लक्ष्मीनारायण अग्रवाल.
7. अग्रवाल, आर. एवं अरीना, विपिन (1989) : मनोविज्ञान एवं शिक्षा में मापन व मूल्यांकन, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा.
8. प्रसाद, गोमती (2004): ''रीवा संभाग की अनुसूचित जाति एवं जनजाति के बालक–बालिकाओं की षैक्षिक स्थिति का समीक्षात्मक अध्ययन'' पी–एच.डी. (शिक्षा) अ.प्र.सिंह वि.वि. रीवा (म.प्र.)
9. त्रिपाठी, डॉ. लोकेश (2014) : अनुसूचित जाति एवं जनजाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर उनके आत्मबोध के प्रभाव का अध्ययन, International Journal of Research in Social Sciences and Humanities, Vol. No. 4, Issue No. I, 144-152.
10. निगम, श्रीमती अमलेन्दु किरन (2016) – "हाई स्कूल स्तर पर अध्ययनरत अ.जा. वर्ग की बालिकाओं के शैक्षिक अभिरुचि का समीक्षात्मक अध्ययन" (सतना जिले के विशेष सन्दर्भ में), शोध प्रबन्ध, अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा (म.प्र.)
11. जिला सांख्यिकी पुस्तिका, सीधी, 2015, पृ. 6.